कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 03 (01): 47-48-, 2023

धान की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन

विशाल अहलावत आर०एस० दादरवाल कौटिल्य चौधरी दीपिका ढांडा

मृदा विज्ञान विभाग
चौ० चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय हिसार हरियाणा

Received: **Dec 02, 2022;** ***Revised:*** **Dec 04, 2022** ***Accepted:*** **Dec 04, 2022**

चावल का भारतीय भोजन में प्रमुख एंव महत्वपूर्ण स्थान है। यह धान की खेती के रूप में उगाया जाता है। भारत के उत्तर व उत्तर-पश्चिमी राज्यों में धान मुख्यत खरीफ के समय उगाया जाता है। परंतु दक्षिण एंव पूर्वोत्तर राज्यों में यह रबी में भी उगाया जाता है। धान की खेती के लिए अधिक तापमान अधिक नमी लम्बे समय तक धूप व अधिक मात्रा में पानी की उपलब्धता अति आवश्यक हैं। सामान्यत 20° से 37.5° सेल्सियस का तापमान धान की खेती के लिए अनुकुल हैं। उत्तरी एंव उत्तर पश्चिमी राज्यों में मई माह से मध्य नवंबर का समय धान की खेती के लिए उचित है।

वैश्विक स्तर पर भारतीय चावल की मांग एंव इसके निर्यात को मद्देनजर रखते हुए धान की उत्पादकता एंव चावल की गुणवत्ता में बढ़ोतरी अति आवश्यक हैं। धान की उत्पादकता एंव चावल की गुणवत्ता में बढ़ोतरी के लिए धान की फसल में पोषक तत्वों का उचित प्रबंधन एक अति महत्वपूर्ण कदम है।

धान की फसल में पोषक तत्वों की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। इन तत्वों में नाईट्रोजन

e-ISSN No. 2583-0937

फास्फोरस पोटाश जिंक एंव लौह तत्व प्रमुख हैं। अतः इन तत्वों को मिट्टी में खाद या उर्वरक के रूप में डाल कर फसल की मांग को पूर्ण करना अति आवश्यक है।

- मध्यम से कम अवधि में पकने वाली धान की किस्मों में 60 कि०ग्रा० नाइट्रोजन (130 कि०ग्रा० युरिया) 24 कि०ग्रा० फास्फोरस (150 कि०ग्रा० सिंगल सुपर फास्फेट) 24 कि०ग्रा० पोटाश (40 कि०ग्रा० म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा 10 कि०ग्रा० जिंक सल्फेट प्रति एकड़ डाल दें।
- वहीं कम अवधि में पक कर तैयार होने वाली किस्मों के लिए 48 कि०ग्रा० नाइट्रोजन (105 कि०ग्रा० युरिया) 24 कि०ग्रा० फास्फोरस (150 कि०ग्रा० सिंगल सुपर फास्फेट) 24 कि०ग्रा० पोटाश (40 कि०ग्रा० म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा 10 कि०ग्रा० जिंक सल्फेट प्रति एकड़ डालने की सिफारिश की जाती है।
- सभी किस्मों में कुल मात्रा का एक तिहाई नाइट्रोजन फास्फोरस पोटाश तथा जिंक सल्फेट की सम्पूर्ण मात्रा को फसल की रोपाई करते समय डाल दें। तथा शेष नाइट्रोजन को दो बार समान मात्रा में रोपाई के तीन (3) व छः (6) सप्ताह बाद फसल को दें।
- फास्फोरस की आपूर्ति के लिए अगर डी०ए०पी० (52 कि०ग्रा० प्रति एकड़) उर्वरक का उपयोग किया गया हो तो युरिया की मात्रा को 20 कि०ग्रा० प्रति एकड़ कम कर दें।
- जिन खेतों में हरी खाद दी गई हो उनमें जिंक सल्फेट को छोड़ कर बाकी सभी खादों को दो-तिहाई (2/3) मात्रा का ही प्रयोग करें।
- अगर धान की रोपाई से पूर्व 6 टन प्रति एकड़ के हिसाब से गोबर की खाद खेत में डाली गई हो तब धान की सभी किस्मों के लिए 12 कि०ग्रा० प्रति एकड़ नाइट्रोजन (26 कि०ग्रा० युरिया) व 12 कि०ग्रा० प्रति एकड़ फास्फोरस (75 कि०ग्रा० सिंगल सुपर फास्फेट) का कम प्रयोग करें।
- बासमती धान की बौनी किस्मों में 36 कि०ग्रा० नाइट्रोजन (80 कि०ग्रा० युरिया) 12 कि०ग्रा० फास्फोरस (75 कि०ग्रा० सिंगल सुपर फास्फेट) तथा 10 कि०ग्रा० जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की दर से डालें।
- लम्बी बासमती की किस्मों में 24 कि०ग्रा० नाइट्रोजन (50 कि०ग्रा० युरिया) 12 कि०ग्रा० फास्फोरस (75 कि०ग्रा० सिंगल सुपर फास्फेट) एंव 10 कि०ग्रा० जिंक सल्फेट प्रति एकड़ डालें।
- बासमती धान की लम्बी व बोनी दोनों तरह की किस्मों में फास्फोरस तथा जिंक सल्फेट की सिफारिशशुदा पूरी मात्रा धान की रोपाई के समय डाल दें।
- लम्बी बासमती में नाइट्रोजन को दो (2) बार समान भागों में रोपाई के तीन (3) व छः (6) सप्ताह बाद डालें।
- बौनी बासमती में एक-तिहाई (1/3) नाइट्रोजन रोपाई के समय विशेष
- नाइट्रोजन को दो बराबर हिस्सों में रोपाई के तीन (3) व छः (6) सप्ताह बाद डालें।

अतः किसान भाई धान की फसल में उपरोक्त सिफारिशों के अनुसार पोषक तत्वों का उचित प्रबंधन करके धान की फसल में अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।